International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(III), April - June, 2023, pp. 167-173

21 वीं सदी में भारतीय विदेश नीतिः परिवर्तन एवं चुनौतियां

सोहन लाल जाट*

सार

भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक भारतीय विदेश नीति में अनेक परिवर्तन आए हैं। शीत युद्ध के दौरान भारत की विदेश नीति मुख्यतः आदर्शवाद और गुटनिरपेक्षता पर आधारित थी जो विकासशील देशों के मुद्दों पर केंद्रित थी। शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात विश्व राजनीति में नाटकीय परिवर्तन आए और भारत की विदेश नीति भी इन परिवर्तनों से गहरे रूप में प्रभावित हुई। अब भारत की विदेश नीति यथार्थवाद पर आधारित होकर राष्ट्रीय हितों पर बल देने के साथ विश्व की विभिन्न शक्तियों के साथ सहयोगपूर्ण संबंध पर आधारित हो गई है। 21 वीं सदी में भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय विदेश नीति का ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में इसमें आए परिवर्तनों की व्याख्या करने के साथ–साथ इसकी भविष्य की चुनौतियों का भी वर्णन करने का प्रयास करता है। यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

शब्दकोषः *विदेश नीति, भारत, शीत युद्ध, परिवर्तन, चुनौतियां।*

प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति उत्तरोत्तर प्रगति की घरेलू प्राथमिकताओं को एकीकृत करती है जिसमें सामाजिक तथा आर्थिक विकास भी समाहित है। साथ ही, भारतीय विदेश नीति वैश्विक चुनौतियों का भी सामना करती है जिसमें अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा अथवा समूह में हथियारों के नष्ट किये जाने की सहमति, समुद्री सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सुधार शामिल है। जबकि हम अपने घरेलू लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं, हमें वैश्विक मामलों में तेजी से बदलते परिवेश एवं अपनी सुरक्षा तथा आर्थिक वास्तुशास्त्र के साथ अपने बेहतर तारतम्य को भी सुनिश्चित करना होगा जिससे भारत के हितों की रक्षा हो सके। अत्यन्त जटिल पड़ोस की स्थिति को देखते हुए अपनी पहली प्राथमिकता के रूप में भारत ने राजनीतिक रूप से स्थिर तया आर्थिक रूप से सुरक्षित परिधि का ध्यान रखा है। पड़ोसी देशों के साथ उसके रिश्ते इस दृ ढ़निश्चय के साथ रुके हुए हैं। भारत की पड़ोसी नीति अपने पड़ोसी देशों के मध्य उपमहाद्वीप के लाभ के लिए परस्पर संपर्क नेटवर्क, व्यापार तथा निवेश में वृद्धि करने तथा भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि को अपने पड़ोसी देशों के मध्य साझा करने पर जोर देती है।

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

भारत की विदेश नीति समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व के लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित है। विदेश नीति निर्धारण का उद्देश्य अपने पड़ोसियों तथा शेष विश्व के साथ शांतिपूर्ण संबंधों को सुनिश्चित करना है और अंतरराष्ट्रीय मामलों पर निर्णय लेने की स्वायत्तता की सुरक्षित करना है। भारतीय हमारी विदेश नीति के कुछ मूलभूत सिद्धांत हैं–

- सामाजिक–आर्थिक विकास एवं राजनीतिक स्थिरता जैसे राष्ट्रीय हितों को प्रोत्साहित करना।
- राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करना।
- विभिन्न देशों के बीच शांति, मित्रता, सद्–इच्छा एवं सहयोग को बढ़ावा देना।
- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं निरंकुश शक्तियों का प्रतिरोध करना एवं अन्य देशों के आंतरिक मामलों में विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली देशों द्वारा हस्तक्षेप का विरोध करना।
- राष्ट्रों के बीच विवादों के शांतिपूर्ण समाधान को प्रोत्साहित करना।
- शस्त्रीकरण का विरोध करना एवं निःशस्त्रीकरण अभियान का समर्थन करना।
- मानवाधिकारों का सम्मान करना एवं जाति, प्रजाति, रंग, नस्ल, घर्म इत्यादि पर आधारित भेदभाव एवं असमानताओं का विरोध करना।
- पंचशील के गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों को प्रोत्साहित करना।

भारतीय विदेश नीति के गत 75 वर्षों का सिंहावलोकन करें तो हम यह पाते हैं कि यह पूरी यात्रा इतनी आसान भी नहीं रही है। एक लंबी इस्लामी–ब्रिटिश परतंत्रता के बाद जब देश आजाद हुआ तो पूरी दुनिया ने इसके विफल होने की भविष्यवाणियां की थी। भारत ने अपने जिजीविषा एवं संघर्ष के बल पर आज एक ऐसा मुकाम हासिल किया है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य ना होते हुए भी आज दुनिया के सभी स्थाई एवं अस्थाई सदस्य भारत के पक्ष को जानने की कोशिश करते हैं। वैश्विक स्तर पर यदि हम अपने 75 वर्षों की विदेश नीति पर विचार करें तो पाते हैं कि दुनिया के अन्य देशों के द्वारा खड़ी की गयीं समस्याएं वास्तव में भारत के लिए मुख्य बाधाएं नहीं थींय अपितु भारत के द्वारा स्वयं से बनाई गईं कई वैचारिक हठधर्मितायें थीं जिसके कारण भारत अपने महत्व के साथ विश्व मंच पर नहीं आ पा रहा था।

हालाँकि शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारतीय विदेश नीति में अनेक परिवर्तन दृष्टगत हुए हैं और अब भारत की विदेश नीति आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद का अनुसरण कर रही है जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आये हैं। भारत अब एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है।

भारत की विदेश नीति का पहला चरण 1947 में देश के आजादी के साथ प्रारंभ होकर 1962 तक चलता है। इसे गुटनिरपेक्षता का दौर मानते हैं जिसमें कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जन्मे हुए शीत युद्ध के कालखंड में दो शक्तिशाली देशों के बीच बड़ी दुनिया में भारत के सामने मुख्य चुनौती के रूप में उसकी संप्रभुता की रक्षा, अपने अर्थ तंत्र को मजबूत करना, एक राष्ट्र के रूप में अपनी गरिमा को बनाए रखना तथा एशिया व अफ्रीका महाद्वीप के नए स्वतंत्र हुए देशों में एक अगुआ की भूमिका में स्वयं को सार्थक सिद्ध करने के रूप में चार महत्वपूर्ण बिंदु थे। 1962 के भारत चीन युद्ध के साथ ही गुटनिरपेक्षता के इस आशावादी सिद्धांत का एक निराशाजनक अंत हुआ।

सन 1962 से 1971 तक भारत की विदेश नीति का दूसरा दौर चला जिसे हम यथार्थवाद एवं सुधारों का दौर कह सकते हैं। 1964 में भारत ने महत्वपूर्ण रक्षा एग्रीमेंट अमेरिका के साथ साइन किया। 1962 के चीन आक्रमण ने भारत की राजनीति को देश की सुरक्षा राजनीति एवं आर्थिक संसाधनों पर विशेष रूप से बल देने वाली नीतियों की तरफ मोड़ा। तमाम राजनैतिक स्थिरता एवं क्षीण अर्थव्यवस्था के साथ जैसे–तैसे भारत ने इस दौर को पार किया।

इसके बाद तीसरा दौर प्रारंभ होता है जो 1971 से 1991 तक, 20 वर्ष के लंबे कालखंड तक चला। इस दौर में भारत का प्रारंभिक ध्यान अपने क्षेत्रीय संसाधनों के सहेजने पर था। इसका प्रारंभ पाकिस्तान के साथ युद्ध एवं बांग्लादेश के निर्माण के साथ हुआ परंतु दुर्भाग्य से इसका अंत श्रीलंका में भारतीय शांति सेना की कार्यवाही के एक दुखद अध्याय के साथ हुआ। यह वही दौर है जिसमें चीन, पाकिस्तान एवं अमेरिका के गठजोड़ ने पूरी क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित किया एवं भारत की संप्रभुता पर भी खतरा उत्पन्न हुआ ऐसे में भारत को सोवियत रूस के पक्ष में जाकर अपने समीकरणों को साधना पड़ा।

परंतु सोवियत संघ के विघटन तथा 1991 में पैदा हुए आर्थिक संकट के साथ ही इस तीसरे दौर का अंत हुआ एवं भारत को अपनी विदेश नीति के साथ–साथ घरेलू नीतियों को भी गंभीरता से निरीक्षण करने एवं सार्थक सुधार करने की आवश्यकता महसूस हुई। देश की विदेश नीति का चौथा दौर 1991 से लेकर 1999 तक चला जिसमें रणनीतिक एवं कूटनीतिक नीतियों के साथ–साथ अब देश को आगे बढ़ने के लिए आर्थिक नीतियों का भी समावेशन करना पड़ा।

यह वह दौर था जो शीत युद्ध खत्म होने के बाद पूरी तरह से एक ध्रुवीय या अमेरिका आधारित बन गया था। जिसमें भारत ने अपनी विदेश नीति को न केवल परिवर्तित किया बल्कि इसमें एक क्रांतिकारी परिवर्तन ले आया। इस दौर में भारत ने आर्थिक एवं कूटनीतिक क्षेत्रों में अपने आप को बहुत ही तेजी से स्थापित किया। इसी क्रम में अमेरिका एवं इजरायल के साथ भारत के रिश्ते बहुत तेजी से सुधरे। अमेरिका के साथ अपने संबंधों को सुधारने के क्रम में 1998 में भारत ने अपना दूसरा नाभिकीय परीक्षण किया। भारत को अमेरिका की इच्छा के विरुद्ध नाभिकीय परीक्षण करने का आत्मविश्वास तेजी से बढ़ती हुई देश की अर्थव्यवस्था के कारण मिला। इन 9 वर्षों में भारत की सुदृढ़ होती आर्थिक स्थिति के साथ–साथ नाभिकीय परीक्षण एवं कारगिल युद्ध में पाकिस्तान को धूल चटाने के कारण वैश्विक स्तर पर भारत का महत्व तो बढ़ा ही साथ ही साथ भारत को व्यवहार पर विदेश नीति के परिवर्तन का लाभ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा।

इसके बाद पांचवां चरण 2000 से 2013 तक कुल 13 वर्षों तक चला। इस दौर में भारत, अमेरिका एवं चीन के बीच में शक्तियों के संतुलन का एक बेहद अहम किरदार बनकर उभरा। इस दौर में भारत की प्रासंगिकता पूरे विश्व में बहुत तेजी से बढ़ी। 2005 में एक ओर भारत–अमेरिका के नाभिकीय सौदे से भारत ने अमेरिका के साथ संबंधों को बेहतर किया तोय दूसरी ओर रूस एवं चीन के साथ व्यापारिक एवं जलवायु परिवर्तन के क्षेत्रों में उल्लेखनीय साझेदारी की। यह भारत के लिए संभावनाओं का वह दौर था जिसमें भारत का प्रभाव वैश्विक स्तर पर बढ़ता रहा।

इसमें पहला मुख्य बिंदु है यथार्थवाद। 1972 में पाकिस्तान को हराने के बाद भी शिमला समझौता करते हुए यह सोचना कि पाकिस्तान सुधर जाएगा, भारत के लिए यह एक बड़ी भूल साबित हुई। समय के साथ पाकिस्तान और अधिक खतरनाक पड़ोसी देश के रूप में सामने आया जिसने कश्मीर के विवाद को और अधिक विवादपूर्ण बना दिया। वर्तमान की विदेश नीति पूरी तरह से यथार्थवादी हैय पर इसका उदाहरण हमें यूक्रेन संकट के दौरान रूस के साथ कच्चे तेल की खरीद जैसे निर्णयों में देखने को मिलता है।

वर्तमान विदेश नीति का दूसरा प्रमुख बिंदु है, अर्थव्यवस्था संचालित कूटनीति। यदि हम 1945 के दौर को देखें तो दुनिया की सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं जैसे अमेरिका, चीन, जापान, सोवियत संघ ने वैश्विक परिदृश्य को अपने राष्ट्रीय विकास में प्रयोग किया। भारत ने यद्यपि उस दौर का सही प्रयोग नहीं कियाय परंतु वर्तमान में भारत की विदेश नीति आर्थिक लाभ के द्वारा ही सर्वाधिक प्रभावित हो रही है। भारत ने संरक्षणवादी बाजार एवं संकुचित आयात पद्धति को त्याग कर एक समावेशी वैश्वीकरण की नीति को स्वीकार किया है।

इस नई विदेश नीति का तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु है, बहु ध्रुवीय वैश्विक क्रम को स्वीकार करना। भारत की विदेश नीति की वैश्विक सफलता इस रूप में देख सकते हैं कि इसने अपने विरोधी समूहों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए एक वैश्विक साम्य स्थापित किया है। जैसे शंघाई कॉरपोरेशन एवं क्वाड, रिक, ईरान एवं सऊदी अरब, इजराइल एवं फिलिस्तीन।

भारतीय विदेश नीति का चौथा बिंदु उचित जोखिम है। भारत अब अपनी पहचान हाथी की जगह शेर के रूप में बना रहा है। इतिहास का विमर्श करने पर यह स्वयं सिद्ध हो जाता है कि कम जोखिम वाली विदेश नीतियों ने हमेशा ही कम लाभ दिया है। ऐसे में भारत जबकि वैश्विक विकास की सीढ़ी पर आगे बढ़ता है तो जोखिम भरे कदम उठाना आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान भारतीय विदेश नीति का पांचवां एवं अंतिम बिंदु है, वैश्विक परिस्थितियों के अनुसार विवेकपूर्ण निर्णय लेना। वैश्वीकरण के परिदृश्य में एक अच्छी विदेश नीति उसे माना जाता है जिसमें संभावनाओं, प्रतिस्पर्धाओं, जोखिमों एवं प्रतिफल की वैश्विक स्तर पर अच्छी समझ हो। किसी भी देश द्वारा घरेलू स्तर पर किसी विदेश नीति को अपनाना और उसका अनुसरण करना आसान हो सकता हैय परंतु वैश्विक समझ के अभाव में बनाई गई विदेश नीति उस देश के लिए खतरा बन सकती हैं। 1947 में कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना, शीत युद्ध के दौरान चीन एवं रूस के बीच की दूरियों को सही समय पर भांपने में गलती करना, अक्साई चीन एवं अरुणाचल के मुद्दे पर चीन के इरादों को ना समझ पाना, अमेरिका एवं चीन के लिए पाकिस्तान की आवश्यकता को गंभीरता से न लेना भारत की विदेश नीति की वैश्विक अपरिपक्वता को दर्शाता है।

21 वीं सदी में बदलती भारतीय विदेश नीति

21 वीं सदी में वैश्विक परिदृश्य में अनेक परिवर्तन आए यथा, अमेरिका के वैश्वीकरण से वापस राष्ट्रीयता की तरफ आकर्षित होना, चीन के उत्कर्ष, ब्रेक्जिट के कारण यूरोपीय संघ पर संकट, वैश्विक अर्थव्यवस्था के भीतर बड़े परिवर्तन के साथ ही रूस, तुर्की एवं ईरान के द्वारा अपने गौरवशाली अतीत की वापसी के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी के साथ तेजी से बदलती दुनिया में तकनीकी, संचार एवं व्यापार ने विश्व की महाशक्तियों एवं छोटे देशों की नीतियों के निर्धारण में अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली है। संयुक्त राष्ट्र एवं विश्व व्यापार संगठन इस बदलते परिदृश्य में धीरे–धीरे अप्रासंगिक भी सिद्ध हो रहे हैं। ऐसे में पूरे विश्व के देशों एवं उनकी नीतियों को समझते हुए, चीन आदि देशों से प्रतिस्पर्धा करते हुए भारत द्वारा अपने हितों को साधना एक बेहद जटिल प्रक्रिया है। तेजी से बदलते इस वैश्विक परिदृश्य में भारत के साझेदारों, मुद्दों एवं संबंधों का तेजी से बदलना भी सर्वथा प्रासंगिक है। साथ ही, प्रत्येक मुद्दे पर देश के हितों की रक्षा को सुनिश्चित किया जा सके, यह भी संभव नहीं है। तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में तेजी से निर्णय लेने वाली कूटनीति ही सफल मानी जाएगी।

वर्तमान की भारतीय विदेश नीति अपने उच्चतम सामर्थ्य, तीव्र महत्वाकांक्षाओं एवं जिम्मेदारी की श्रेष्ठ भावनाओं के साथ विश्व मंच पर डटी हुई है। भारत आज गुटनिरपेक्षता जैसे अप्रासंगिक हो चुकी नीति से आगे बढ़ते हुए बड़ी एवं मध्यम शक्तियों के साथ अभूतपूर्व साझेदारी कर रहा है। वर्तमान भारतीय विदेश नीति शक्ति संपन्न देशों के साथ सामंजस्य स्थापित करके उनके साथ आपसी साझेदारी को आगे बढ़ा रहा है। ब्रिक्स, क्वाड, आईटूयूटू जैसे संगठनों में भारत की सक्रियता उसे एक ऐसा कूटनीतिक मिलन बिंदु बनाती है, जहां से विश्व कल्याण की नीतियों को प्रश्रय मिल सकता है। भारत अपनी विदेश नीति के साथ–साथ अपने इरादों और वादों पर खरा उतर रहा है।

वर्तमान भारतीय विदेश नीति ने प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा एवं संरक्षण का मुद्दा दुनिया के देशों के सामने रखा है, वह भी प्रशंसनीय है। अफगानिस्तान एवं यूक्रेन से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालकर देश वापस लाना भारत की बदलती विदेश नीति का एक सशक्त हस्ताक्षर है। भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बरकरार रखते हुए रूस तथा पश्चिम के बीच एक समन्वय स्थापित करते हुए अपने हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर यह संदेश दिया है कि भारत की विदेश नीति के लिए अब उसके अपने हित सबसे महत्वपूर्ण हैं।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक के 75 वर्षों में सम्पूर्ण विश्व व्यवस्था ने एक नवीन स्वरूप ग्रहण कर लिया है। विश्व व्यवस्था के नवीन ढांचे में खुद को समायोजित करने की प्रक्रिया के अधीन भारत ने भी अपनी विदेश नीति को पर्याप्त लचीला एवं अनुकूलनशील स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है। भारत अपने चारों ओर शांतिपूर्ण माहौल बनाने के प्रयास करता है और अपने विस्तारित पास–पड़ोस में बेहतर मेल–जोल के

लिए काम करता है। भारत की विदेशी नीति में इस बात की अच्छी तरह समझा गया है कि जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा जैसे मुद्दे भारत के रूपांतरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और उनके समाधान के लिए वैश्विक सहयोग अनिवार्य है।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियां

किसी भी देश की विदेश नीति के बारे में माना जाता है कि यह लगभग स्थायी होती है क्योंकि इसका स्वरूप राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर ही तय किया जाता है। यह भी माना जाता है कि सरकारें बदलने के साथ विदेश नीति प्रायः नहीं बदलती, लेकिन वैश्विक भू–राजनीतिक परिस्थितियों तथा आंतरिक राजनीति में परिवर्तन होने के कारण विदेश नीतियों में आंशिक परिवर्तन की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। यही बात भारतीय विदेश नीति पर भी लागू होती है।

भारत की विदेश नीति को सबसे बड़ी चुनौती उसके पडोसी देशों से ही मिलती रही है। अतः भारत को 'इंडिया फर्स्ट' और अपने 'पड़ोस' को केंद्र में रखकर अपनी विदेश नीति को आकार देना पड़ता है। भारत के पड़ोस में अस्थिरता बहुत है। पाकिस्तान लगभग असफल राष्ट्र होने के कगार पर है और नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता भारत की चिंता का एक बड़ा कारण है। म्यांमार, बांग्लादेश और श्रीलंका से हमारे संबंध इन देशों में सरकारें बदलने के साथ बनते–बिगड़ते रहते हैं। चीन की अपनी अलग क्षेत्रीय दादागिरी है, जिसे भारत न चाहते हुए भी बर्दाश्त करने को विवश है। सार्क देशों में भूटान एक मात्र ऐसा देश है जिसके साथ हमारे संबंध मधुर बने रहते हैं। अतः भारत को अपने पड़ौसी देशों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाये रखने की आवश्यकता है

भारतीय विदेश नीति के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती है। चीन के साथ अपने संबंधों की दिशा निर्धारित करना। चीन की प्रसारवादी नीति और आक्रामक रवैये से वैश्विक स्तर पर असहजता बढ़ी है। चीन, पूर्वी चीन सागर और दक्षिणी चीन सागर को पूरी तरह से अपने प्रभाव का क्षेत्र मानता है। इसके साथ ही, भारत के साथ भी चीन सीमा–विवाद में उलझा हुआ है जिसके कारण दोनों देशों के संबंध सामान्य नहीं हो पा रहे हैं। दोनों देशों के बीच वर्ष 1962 में प्रत्यक्ष युद्ध भी हो चुका है। अतः भारत के सामने चीन से उचित तरीके से निपटना एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

रूस हमारा पुराना मित्र देश है और उसने इस मित्रता को समय आने पर साबित भी किया है। कुछ समय पहले तक भारत में यह माना जाता था कि चीन और पाकिस्तान के साथ रूस की निकटता होना आसान नहीं है। लेकिन कुछ समय से अमेरिका के साथ भारत की बढ़ती निकटता के कारण रूस हमारे पड़ोसी पाकिस्तान और चीन के साथ संबंधों को बढ़ावा दे रहा है। यह भारत के लिये एक चुनौती तो है ही, साथ ही चिंता का कारण भी है। चीन मौका पाते ही रूस जैसे भारत के पारंपरिक सहयोगी के साथ संबंध बढ़ाने का प्रयास करता रहता है। इन दोनों देशों की सेंधमारी के बाद अब इतना तो स्पष्ट हो चुका है कि भारत–रूस संबध केवल भावनाओं के आधार पर आगे नहीं बढ़ सकते। लेकिन रूस के साथ हमारे आर्थिक–सामरिक और रक्षा संबंध बेहद मजबूत हैं और भारत इसके लिये अब भी उसके सबसे बड़े बाजारों में से एक है। लेकिन हमें रूस के साथ अपने संबंधों की मजबूती बहाल करने के लिये नए सिरे से प्रयास करने होंगे और कूटनीतिक संकेतों के बजाय सीधे रूसी नेतृत्व से बात कर उसे दूर करना होगा।

वैश्विक मंचों पर बढ़ रही भारत की स्वीकार्यता महाशक्ति कहलाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इसके अलावा भारत–अमेरिका–जापान त्रिपक्षीय संवाद के साथ संपर्क और भी बढ़ाना चाहिये और समान क्षेत्रीय उद्देश्यों वाले समूह में ऑस्ट्रेलिया को भी शामिल कर संपर्क को और बढ़ाया जाए। इसके अलावा कुछ घरेलू चुनौतियाँ भी हैं, जिनसे पार पाए बिना वैश्विक महाशक्ति का दर्जा हासिल करना हमारे लिये आसान नहीं होगा। ऐसे में अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता और उसके सहयोग से वैश्विक पटल पर महाशक्ति कहलाने के भ्रम में न पड़ते हुए भारत को अपनी उन घरेलू कमजोरियों को दूर करना होगा, जो इस राह में प्रमुख बाधा बन सकती हैं।

आर्थिक उदारीकरण के लगभग 25 वर्ष बीत जाने के बाद भी देश में आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक पर्याप्त रूप से नहीं पहुँच पाया है, जो तीव्र आर्थिक विकास के लिये बेहद आवश्यक है। अभी भी भारत में स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा जैसे आधारभूत सामाजिक परिणामों को प्राप्त करने की दिशा में प्रयास जारी हैं। इन सभी परिणामों का समावेशी होना नागरिकों के पूर्ण विकास के साथ–साथ बेहतर जीवन यापन हेतु आवश्यक सभी प्रकार की बुनियादी जरूरतों के संदर्भ में बेहद आवश्यक है। पिछले कुछ समय से भारत के आर्थिक विकास में आई कमी का कारण वैश्विक आर्थिक संकट बताया जा रहा है, लेकिन विकास दर को बनाए रखने में विफलता का एक बड़ा कारण प्रतिभाओं का समुचित इस्तेमाल न होना और कुशल श्रम की कमी भी है। कोई भी देश अपनी विकास दर को तभी बनाए रख सकता है, जब आधारभूत उद्योगों के सभी मानकों पर उसके प्रदर्शन में निरंतरता बनी रहे।

भारत विश्व का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश है, और यह भी उतना ही सत्य है कि हथियारों के मामले में आत्मनिर्भर हुए बिना कोई भी देश वैश्विक महाशक्ति होने का दावा नहीं कर सकता। अब यह भी स्पष्ट हो चुका है कि कोई भी महाशक्ति हथियारों की अपनी तकनीक किसी भी देश से साझा नहीं करती। वैसे रक्षा अर्थशास्त्र का एक बुनियादी नियम यह है कि किसी हथियार या रक्षा उत्पाद को बनाना उसे खरीदने से ज्यादा महंगा पड़ता है। इसलिए हथियार को विकसित करना तभी ठीक रहता है, जब वह अंतरराष्ट्रीय बाजार में आने से पहले आपकी सेना के पास आ जाए। देश की नई रक्षा नीति में सेना, डीआरडीओ, सार्वजनिक उपक्रमोंध्सार्वजनिक रक्षा उपक्रमों और निजी कंपनियों के बीच सहयोग के जरिये अनुसंधान एवं विकास में प्रयास करने की पहल की है। लेकिन इतने मात्र से काम नहीं चलने वाला, ऐसे में भारत के लिये यह बेहद जरूरी है कि इस मामले में आत्मनिर्भरता पाने के लिए डिजाइन तैयार करने की क्षमता के साथ–साथ उत्पादन करने की क्षमता को भी हासिल किया जाए।

निष्कर्ष

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय विदेश नीति में अनेक बदलाव और परिवर्तन दृष्टिगत हुए हैं जिसने इस देश की विदेश नीति को भी प्रभावित किया है। विदेश नीति के मामले में भारत की सबसे बड़ी चुनौती केवल यह नहीं है कि अपने पड़ोसियों तथा आसियान एवं पश्चिम एशिया सहित अन्य देशों के साथ सामंजस्य किस प्रकार बनाए रखा जाए, बल्कि विश्व की प्रमुख शक्तियों के साथ अपने संबंधों को बढ़ाना भी एक चुनौती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि चीन ने अपनी वित्तीय एवं सैन्य ताकत के जरिये तथा भारी मात्रा में निवेश कर भारत के पड़ोस में अपना प्रभाव मजबूत किया है, जो वैश्विक महाशक्ति कहलाने और हमारी विदेश नीति के उद्देश्यों की राह में बाधक बन सकता है। लेकिन बड़े भौगोलिक क्षेत्र, आर्थिक एवं सैन्य शक्ति, मानव संसाधन तथा रणनीतिक लाभ के चलते अंतरराष्ट्रीय पटल पर चीन के विरोध के बावजूद भारत ऐसी भूमिका में आ गया है, जहाँ उसे वैश्विक महाशक्ति स्वीकार करने की औपचारिकता ही शेष रह गई है। इस प्रकार भारत ने 21 वीं सदी में वैश्विक परिस्थितियों के अनुकूल अपनी विदेश नीति में परिवर्तन करने का प्रयास किया है और वैश्विक पटल पर एक महाशक्ति बनकर उभरा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Pant, Harsh V., ed. *New Directions in India's Foreign Policy: Theory and Praxis*. Cambridge: Cambridge University Press, 2019.
2. Pant, Harsh V. *Indian Foreign Policy: The Modi Era*. New Delhi: Har Anand Publication, 2019.
3. Pant, Harsh V. *India's Foreign Policy: An Overview*. New Delhi: Orient Blackswan, 2018.
4. Menon, Shivshankar. *Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy*. New Delhi: Penguin, 2018.
5. Pande, Aparna. *From Chanakya to Modi: Evolution of India's Foreign Policy,* New Delhi: Harper Collins, 2017.

6. Dubey, Muchkund. *India's Foreign Policy: Coping with the Changing World*. New Delhi: Orient Blackswan, 2017.

7. Ganguly, Anirban. *The Modi Doctrine: New Paradigms in India's Foreign Policy*. Delhi: Wisdom Tree Publishers, 2016.

8. Ganguly, Sumit. *Engaging the World: India's Foreign Policy since 1947*. New Delhi: Oxford University Press, 2015.

9. Ganguly, Sumit. *Indian Foreign Policy*, New Delhi: Oxford University Press, 2015.

10. Bajpai, Kanti P. and Harsh V. Pant, ed. *India's Foreign Policy: A Reader*. New Delhi: Oxford University Press, 2013.

11. दीक्षित, जे. एन. भारतीय विदेश नीति. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, 2018.

12. सीकरी, राजीव. भारत की विदेश नीतिः चुनौती और रणनीति. दिल्लीः सेज भाषा, 2017.

13. दत्त, वी. पी. स्वतंत्र भारत की विदेश नीति. दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट, 2010.

14. दीक्षित, जे. एन. भारत की विदेश नीति और इनके पड़ौसी. दिल्लीः ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2005

❖◆❖